

Kumari Tarpanatmaka StotraM

——
कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रं

——
Document Information



Text title : KumAri Tarpanatmaka Stotram

File name : kumArItarpaNAtmakastotram.itx

Category : devii, devI, stotra

Location : doc_devii

Author : Hindi Dr. Sudhakara Malaviya

Proofread by : NA

Acknowledge-Permission: Dr. Sudhakara Malaviya

Latest update : January 7, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

January 7, 2024

sanskritdocuments.org



Kumari Tarpanatmaka StotraM

कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रं



शृणु नाथ प्रवक्ष्यामि कुमारीतर्पणादिकम् ॥ ४० ॥

यासां तर्पणमात्रेण कुलसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।

कुलबालां मूलपद्मस्थितां कामविदारिणीम् ॥ ४१ ॥

शतधा मूलमन्त्रेण तर्पयामि तव प्रिये ।

मूलाधारमहातेजो जटामण्डलमण्डिताम् ॥ ४२ ॥

हे नाथ! अब इसके बाद कुमारी तर्पणादि की विधि सुनिश्चये, जिनके तर्पणमात्र से कुलसिद्धि (कुण्डलिनी की सिद्धि) निश्चित रूप से हो जाती है । मूलाधार के कमल में निवास करने वाली अ एवं स्वेच्छा रूप से विदार करने वाली कुल बाला का मैं तर्पण करता हूँ । आपकी प्रियतमा मूलाधार में महातेज रूप से विराजमान जटा-मण्डलमण्डिता कुण्डलिनी को मैं सौ बार मूल मन्त्र पढ़ कर तर्पण करता हूँ ॥ ४०-४२ ॥

सन्ध्यादेवीं तर्पयामि कामभीजेन मे शुभे ।

मूलपद्मजयोगाङ्गी कुमारीं श्रीसरस्वतीम् ॥ ४३ ॥

तर्पयामि कुलद्रव्यैस्तव सन्तोषहेतुना ।

यत्के मूलाधारपद्मे त्रिमूर्तिबालनायिकाम् ॥ ४४ ॥

सर्वकल्याणदां देवीं तर्पयामि परामृतैः ।

स्वाधिष्ठाने महापद्मे षड्दलान्तःप्रकाशिनीम् ॥ ४५ ॥

हे हमारा कल्याण करने वाली सन्ध्या देवी ! मैं कामभीजे (क्लीं) से आपका तर्पण करता हूँ मूलाधार के पद्म से युक्त शरीर वाली कुमारी सरस्वती का मैं आपके सन्तोष के कारणभूत कुल-द्रव्यों से तर्पण करता हूँ । मूलाधारपद्म के यत्के में तीन मूर्ति वाली बाल नायिका, जो सबका कल्याण करने वाली देवी हैं, उनका मैं इस परामृत से तर्पण करता हूँ ॥ ४३-४५ ॥

श्रीभीजेन तर्पयामि भोगभोक्षाय केवलम् ।

स्वाधिष्ठानकुलोत्वास विष्णुसङ्केतगामिनीम् ॥ ४६ ॥

स्वाधिष्ठान नामक महापद्म यत्के पर षड्दल कमल के भीतर प्रकाशित होने वाली देवी को मैं केवल भोग तथा भोक्ष प्राप्ति के लिये श्री भीजे (श्रीं) से तर्पण करता हूँ ॥ ४६ ॥

कालिकां निजभीजेन तर्पयामि कुलामृतैः ।

स्वाधिष्ठानाभ्यपन्नस्थां मडातेजोमयीं शिवाम् ॥ ४७ ॥

सूर्यगां शीर्षमधुना तर्पयामि कुलेश्वरीम् ।

स्वाधिष्ठान यज्ञ को प्रकाशित करने वाली, विष्णु के सङ्केत से गमन करने वाली कालिका देवी को निजबीज मन्त्र (कीं) द्वारा कुलामृत से तृप्त कर रहा हूँ ॥ ४७-४८.१ ॥

मणिपूराभ्यमध्ये तु मनोहरकलेवराम् ॥ ४८ ॥

उमादेवीं तर्पयामि मायाबीजेन पार्वतीम् ।

मणिपूराभोजमध्ये त्रैलोक्यपरिपूजिताम् ॥ ४८ ॥

मालिनीं मलयित्तस्य सद्बुद्धिं तर्पयाम्यलम् ।

स्वाधिष्ठान नामक पन्न यज्ञ पर विराजमान, मडातेजोमयी शिवा को, जो सूर्य में निवास करती हैं, ऐसी शीर्ष स्थान में निवास करने वाली कुलेश्वरी का मैं तर्पण कर रहा हूँ । मणिपूर नामक यज्ञ में मनोहर शरीर वाली उमा देवी पार्वती को मैं मायाबीज(कीं) से तर्पण कर रहा हूँ । मणिपूर के कमल यज्ञ के मध्य में त्रैलोक्य परिपूजित "मालिनी" का मल यित्त की सद्बुद्धि का मैं तर्पण कर रहा हूँ ॥ ४८.२-५०.१ ॥

मणिपूरस्थितां रौद्रीं परमानन्दवर्धिनीम् ॥ ५० ॥

आकाशगामिनीं देवीं कुब्जिका तर्पयाम्यलम् ।

तर्पयामि मडादेवीं मडासाधनतत्पराम् ॥ ५१ ॥

योगिनीं कालसन्दर्भा तर्पयामि कुलाननाम् ।

मणिपूर नामक यज्ञ में रहने वाली, परमानन्द को बढाने वाली और आकाश में गमन करने वाली, रौद्रस्वरूपा "कुब्जिका" देवी का मैं तर्पण करता हूँ । मडासाधना में लीन रहने वाली, योगिनी, कालसंदर्भा, कुलानना और मडादेवी का मैं तर्पण करता हूँ ॥ ५०.२-५२.१ ॥

शक्तिमन्त्रप्रदां रौद्रीं लोलजिह्वासमाकुलाम् ॥ ५२ ॥

अपराजितां मडादेवीं तर्पयामि कुलेश्वरीम् ।

मडाकौलप्रियां सिद्धां रुद्रलोकसुष्मप्रदाम् ॥ ५३ ॥

रुद्राणीं रौद्रकिरणं तर्पयामि वधूप्रियाम् ।

शक्ति मन्त्र प्रदान करने वाली, रौद्र रूप धारण करने वाली, लपलपाती ज़ुल से यञ्चल "अपराजिता" नाम की कुलेश्वरी मडादेवी का मैं तर्पण करता हूँ । मडाकौलों को प्रिय लगने वाली, रुद्रलोक के समस्त सुष्मों को देने वाली भयङ्कर प्रकाश उत्पन्न करने वाली और वधूजनों को प्रिय रुद्राणी का मैं तर्पण करता हूँ ॥ ५२.२-५४.१ ॥

षोडशस्वरसंसिद्धिं मडारौरवशिनीम् ॥ ५४ ॥

मडामघपानयित्तां भैरवीं तर्पयाम्यलम् ।

त्रैलोक्यवरदां देवीं श्रीबीजमालयावृताम् ॥ ५५ ॥

मडालक्ष्मीं भवैश्वर्यदायिनीं तर्पयाम्यलम् ।

अकारादि षोडश स्वरों से सिद्धि देने वाली मडारौरव नामक नरक का विनाश करने वाली, मडापद्य के पान में निरत चित्त वाली “भैरवी” का मैं तर्पण करता हूँ । समस्त त्रिलोकी को वर देने वाली, श्री भीज की माला से आवृत शरीर वाली और संसार के समस्त औश्रयों देने वाली “मडालक्ष्मी” का मैं तर्पण करता हूँ ॥ ५४.२-५६.१ ॥

लोकानां छितकर्त्रीञ्च छिताछितजनप्रियाम् ॥ ५६ ॥

तर्पयामि रमाभीजा पीठाधां पीठनायिकाम् ।

जयन्तीं वेदवेदाङ्गमातरं सूर्यमातरम् ॥ ५७ ॥

तर्पयामि सुधाभिश्च क्षेत्रज्ञां माययावृताम् ।

तर्पयामि कुलानन्दपरमां परमाननाम् ॥ ५८ ॥ (कुलानन्दपावनां)

तर्पयाम्यम्बिकादेवीं मायालक्ष्मीर्द्धिस्थिताम् ॥ ५९ ॥

लोगों का छित करने वाली, छित अवे अछित (शत्रु मित्र) जनों को प्रिय करने वाली, आदि पीठ वाली पीठनायिका रमाभीजा (श्री) वाली देवी का मैं तर्पण करता हूँ । सूर्यदेव तथा वेद-वेदाङ्ग की माता, क्षेत्रज्ञा तथा माया से आवृत रहने वाली “जयन्ती” देवी का मैं अमृत से तर्पण करता हूँ । कुलानन्द से परिपूर्णा “परमानना” देवी का मैं तर्पण करता हूँ । लृट्य में माया लक्ष्मी रूप से निवास करने वाली “अम्बिका” देवी का मैं तर्पण करता हूँ ॥ ५६.२-५९ ॥

सर्वासां चरणद्वयाम्भुजतनुं चैतन्यविधावतीं

सौष्यार्थं शुभषोडशस्वरयुतां श्रीषोडशीसङ्कुलाम् ।

आनन्दार्णवपद्मरागप्पथिते सिंहासने शोभिते

नित्यं तत् परितर्पयामि सकलं श्रेताञ्जमध्यासने ॥ ६० ॥

श्रेत कमल के मध्यासन पर विराजित रहने वाली, आनन्द समुद्र में पद्मरागमणि से जटित सिंहासन पर शोभा प्राप्त करने वाली, सभी मडाविधाओं में चैतन्य विधा, जिनका दानों चरण कमल पर अधिष्ठित हैं, जो सौष्य के लिम्बे अकारादि स्वरूपा षोडश स्वरों से युक्त हैं ऐसी षोडशकला वाली भगवती त्रिपुरा का मैं नित्य तर्पण करता हूँ ॥ ६० ॥

इलश्रुतिः -

ये नित्यं प्रपठन्ति चारुसङ्कलस्तोत्रार्धसन्तर्पणं

विधादाननिदानमोक्षपरमां मायामयं यान्ति ते ।

नश्यन्ति क्षितिमण्डलेश्चरगाणाः सर्वाविपत्कारका

राजानं वशयन्ति योगसकलं नित्या भवन्ति क्षणात् ॥ ६१ ॥

अत्यन्त सुन्दर इल देने वाले स्तोत्र के आधे भाग में वर्णित देवी के मायामय (माया के नाम से संयुक्त) इस संतर्पण को जो नित्य पढेंते हैं, वे विधा दान की समस्त निदानभूता मोक्षदात्री भगवती को प्राप्त कर लेते हैं ।

उसे विपत्ति प्रदान कर सताने वाले समस्त राजागण नष्ट हो जाते हैं । इस तर्पण का पाठ करने वाला साधक क्षणमात्र में राजाओं को अपने वश में कर लेता है । किं बहुना समस्त योग इसमें नित्य रूप से निवास करते हैं

॥ ६१ ॥

तर्पणात्मकमोक्षाप्यं पठन्ति यदि मानुषाः ।

अष्टैश्वर्ययुतो भूत्वा वत्सरात्तां प्रपश्यति ॥ ६२ ॥

महायोगी भवेन्नाथ मासाद्यस्यासतः प्रभो ।

त्रैलोक्यं क्षोभयेत्क्षिप्रं वाञ्छाङ्गलमवाप्नुयात् ॥ ६३ ॥

यदि मनुष्य तर्पण से युक्त इस मोक्ष नामक स्तोत्र का पाठ करे तो वह आठो अश्वर्य से युक्त हो कर एक वर्ष के भीतर भगवती का दर्शन प्राप्त कर लेता है । हे नाथ ! हे प्रभो ! इसका स्तोत्र का एक मास अभ्यास करने से साधक महायोगी बन जाता है ।

वह शीघ्र ही सारे त्रिलोकी में उलथल मथाने में समर्थ होता है और उसकी समस्त कामनायें सिद्ध हो जाती हैं ॥ ६२-६३ ॥

भूमध्ये राजराजेशो लभते वरमङ्गलम् ।

शत्रुनाशे तथोय्याटे बन्धने व्याधिसङ्गटे ॥ ६४ ॥

यातुरउते तथा धोरे भये दूरस्य प्रेषणो । (भये द्युःखपदर्शने)

महायुद्धे नरेन्द्राणां पठित्वा सिद्धिमाप्नुयात् ॥ ६५ ॥

शत्रुनाश, उय्याटन, बन्धन और व्याधि का सङ्गट उपस्थित होने पर यतुरङ्गिणी से घिर जाने पर धोर भय उपस्थित होने पर तथा विदेश में स्थित होने पर उसे समस्त श्रेष्ठ मङ्गल प्राप्त हो जाते हैं । वह पृथ्वी में राजराजेश्वर बन जाता है । राजाओं से महायुद्ध उपस्थित होने पर साधक इसके पाठ से सिद्धि प्राप्त कर लेता है ॥ ६४-६५ ॥

यः पठेदेकभावेन सन्तर्पणङ्गलं लभेत् ।

पूजासाङ्गल्यमाप्नोति कुमारीस्तोत्रपाठतः ॥ ६६ ॥

यो न कुर्यात्कुमार्यर्था स्तोत्रञ्च नित्यमङ्गलम् ।

स लभेत् पाशवः कल्पो मृत्युस्तस्य पदे पदे ॥ ६७ ॥

जो कुमारी की अर्चना नहीं करता और नित्य मङ्गल देने वाले इस स्तोत्र का पाठ नहीं करता, वह पशु के समान हो जाता है और पद पद पर उसकी मृत्यु की सम्भावना होती है ॥ ६७ ॥

॥ इति श्रीरुद्रयामले उत्तरतन्त्रे मडातन्त्रोद्दीपने कुमार्युपयर्थाविलासे सिद्धमन्त्रप्रकरणे दिव्यभावनिर्णये कुमारीतर्पणात्मकस्तोत्रं अष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

श्रीरुद्रयामल के उत्तरतन्त्र में मडातन्त्रोद्दीपन में कुमार्युपयर्थाविलासे सिद्धमन्त्र प्रकरण में दिव्य भाव निर्णय में आठवें पटल की ओ सुधाकर मालवीय कृत छिन्दी व्याख्या पूर्ण हुई ॥ ८ ॥

शाक्तप्रमोदे कुमारीतन्त्रे

Kumari Tarpanatmaka StotraM
pdf was typeset on January 7, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

